E Content for students of Patliputra University

B.A(Hons),Part 2, Paper 4

Subject--Philosophy

Title/Heading of Topic-"जॉन लॉक का प्रत्यय (Ideas) सिद्धान्त"

---डॉ. राज नारायण सिंह सहायक प्राध्यापक, दर्शनशात्र विभाग, राम रतन सिंह महाविद्यालय मोकामा, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय

लॉक के अनुसार ज्ञान प्रत्यय से बनता है। प्रत्यय दो प्रकार के है- सरल (Simple) और मिश्रित (Mixed)। सरल प्रत्यय बाह्य या आन्तरिक प्रत्यक्ष से जन्य प्रथम प्रत्यय है। ये सरल इसलिये कहे जाते है कि ये बाह्य या आन्तरिक विषय से सद्य: जन्य होते है तथा इनमें किसी प्रकार का मिश्रण नहीं रहता। इसके विपरीत मिश्र प्रत्यय सरल प्रत्ययों के योग से बनते हैं। अत: इन्हें मिश्र (Compound) कहते है। हमारी बुद्धि सरल प्रत्यय को सर्वप्रथम ग्रहण करती है, उनका विश्लेषण करती है तथा साम्य और वैषम्य के आधार पर उन्हें भिन्न-भिन्न रूप प्रदान करती है। इस प्रकार सरल प्रत्यय ही मिश्र प्रत्यय के उपकरण है। सरल तथा मिश्र प्रत्यय में निम्नलिखित भेद हैं-

१. सरल प्रत्यय के ग्रहण करने में हमारी बुद्धि निष्क्रिय रहती है तथा मिश्न प्रत्ययों में सक्रिय।

२.सरल एक ही प्रकार की इन्द्रियानुभूति है। इस प्रत्यय के चार प्रकार माने गए हैं-

(क) एक बाह्येन्द्रिय से प्राप्त होने वाले प्रत्यय; जैसे- रूप, रस,गन्ध, स्पर्श इत्यादि।

(ख) एक से अधिक बाह्येन्द्रियों से प्राप्त होने वाले, जैसे- विस्तार, आकृति, गति इत्यादि।

(ग) अन्तःकरण के स्वसवेदन से प्राप्त होने वाले,जैसे- चिन्तन, मनन, संकल्प, सन्देह, स्मृति आदि।

(घ) बाह्येन्द्रिय तथा अन्तरिन्द्रिय (मन) के संवेदन से प्राप्त होने वाले, जैसे- सुख, दुःख, सत्ता, शक्ति, एकता आदि।

मिश्र प्रत्यय
(Mixed Ideas)

हम पहले विचार कर आए हैं कि मिश्र प्रत्यय सरल प्रत्ययों के योग से बनते हैं। सरल प्रत्ययों के निर्माण में हमारी बुद्धि निष्क्रिय होती है, क्योंकि यह बाह्य वस्तुओ से जन्य संवेदनाओं को ज्यो का त्यो ग्रहण करती है। इससे हमारा मन सक्रिय हो जाता है। बाह्य वस्तु से जन्य संवेदनाएं सरल प्रत्यय के रूप में बुद्धि पर अंकित होती है तथा इन्हीं सरल प्रत्यय की अपनी क्रिया से मिश्र में बदल देती है। मिश्र प्रत्यय के निर्माण में निम्नलिखित छः अवस्थाओं का वर्णन किया गया है:-

१. सरल प्रत्ययों का ग्रहण (Perecption) - सरल प्रत्यय संवेदना तथा स्वसंवेदना के द्वारा ही बुद्धि को प्राप्त होते है। बुद्धि निष्क्रिय होकर इन्हे यथावत ग्रहण करती है।

२. सरल प्रत्यय का धारण (Retention) - प्रत्ययों का धारण करना स्मृति का काम है। अतः स्मृति न रहे तो प्राप्त संवेदनाएँ विस्मृत हो जायेंगी तथा आगे की ज्ञान-प्रक्रिया भी समाप्त हो जायेगी। ज्ञान के लिये आवश्यक है कि स्मृति संवेदनाओं को धारण करे।

३. प्रत्ययों का पृथक्करण (Discernment) -वस्तुतः बुद्धि की पहली सक्रिय अवस्था यही है। बुद्धि को असंख्य संवेदनाएँ प्राप्त होती हैं। बुद्धि उन सबों को अलग-अलग वर्गो में विभाजित करती है। यदि यह पृथक्करण न हो तो सभी सरल प्रत्यय एक ही साथ रहेंगे तथा किसी विशेष मिश्र प्रत्यय की उत्पत्ति नहीं होगी। अत: पृथक्करण विशिष्टता का द्योतक है।

४. सरल विज्ञानों का सन्तुलन (Comparison) - सन्तुलन का अर्थ है विज्ञानों को क्रम से व्यवस्थित करना। यहाँ समान सरल प्रत्ययों की ही व्यवस्था कर बुद्धि उन्हें सन्तुलित करती है।

५. प्रत्यय का मिश्रण (Composition) - इस अवस्था में बुद्धि सन्तुलित प्रत्ययों का योग कराती है। यह अवस्था प्रत्ययों के पारस्परिक सम्बन्ध का सूचक है।

६. नामकरण (Abstraction) - हम किसी व्यक्ति या वस्तु विशेष का नामकरण उसके सामान्य तथा सार गुणों के आधार पर ही करते हैं। सर्वप्रथम हम किसी वर्ग के सामान्य और सार गुणों को एकत्रित करते है तथा उसे एक संज्ञा का नाम प्रदान करते है जो व्यक्ति विशेष का द्योतक है।

संक्षेप में, लॉक के अनुसार मिश्र प्रत्ययों का विश्लेषण यों किया जा सकता है-

सर्वप्रधम हमारी बुद्धि संवेदन तथा स्वसंवेदन के द्वारा विभिन्न सरल प्रत्ययों को प्राप्त करती है तथा उन्हें एक साथ मिला देती है। इसे सम्मिश्रण क्रिया (Compound) कहते हैं। पुनः बुद्धि क्रम से इनकी व्याख्या करती है। यह सरल प्रत्ययों का क्रमिक नियोजन है। इस क्रम से सरल प्रत्ययों के सम्बन्ध का पता चलता है। इसके बाद भी बुद्धि वस्तु विशेष के नाम और गुण के अनुसार सरल प्रत्ययों को अलग-अलग करती है। उदाहरणार्थ, संसार, सोना, सौन्दर्य, मनुष्य आदि सभी मिश्र प्रत्यय है जो अनेको सरल प्रत्ययों के योग से निर्मित होते है। लॉक के अनुसार मित्र प्रत्यय के असंख्य प्रकार हैं जिनका विभाजन तीन श्रेणियों में किया जा सकता है:-

१ पर्याय (Modes)
२. द्रव्य (Substance)
३ सम्बन्ध (Relation)

१ पर्याय (Modes) - पर्याय सरल-प्रत्ययों के योग से बनते है तथा द्रव्याश्रित है। द्रव्याश्रित कहने का तात्पर्य यह है कि द्रव्य ही पर्याय का आधार है, अर्थात् पर्याय की सत्ता स्वतन्त्र नहीं। उदाहरणार्थ, त्रिभुज, कृतज्ञता, हत्या आदि विचार पर्याय माने गए है। पर्याय के दो प्रकार है-सरल

(Simple) तथा मिश्र (Mixed) यदि एक ही प्रकार की विभिन्न वस्तएँ एक ही वर्ग में रखी जाय तो वह सरल पर्याय है। उदाहरणार्थ, दर्जन (Dozen) कौड़ी (Score) इत्यादि। एक दर्जन कहने का अर्थ है कि एक ही प्रकार की वस्तु जिसकी संख्या बारह है। इसके विपरीत मिश्र पर्याय वे है जिनमें वस्तु के विभिन्न प्रकार हो। उदाहरणार्थ, सौन्दर्य के विचार में रूप, आकृति तथा द्रष्टा का आनन्द आदि अनेक प्रत्यय सम्मिलित है। एक दूसरा उदाहरण लें, काल का प्रत्यय सरल है, परन्तु पल, घण्टा, दिन, पक्ष, मास, वर्ष आदि सभी मिश्र पर्याय है।

२. द्रव्य (Substance) -द्रव्य भी सरल प्रत्ययों का योग है। द्रव्य की सत्ता स्वतन्त्र है। गुण का आधार या आश्रय है। गुण का हम प्रत्यक्ष करते है,परन्तु गुण के आधार (द्रव्य) का प्रत्यक्ष नहीं होता। उदाहरणार्थ, काँच को हम द्रव्य मानते हैं हम केवल इसके रूप, रंग, वचन आदि को ही जानते है, परन्तु इनके आधार के रूप में द्रव्य की सत्ता स्वीकार कर लेते हैं। तात्पर्य यह है कि गुण निराधार नहीं रह सकते, अत: इनके आधार या आश्रय रूप में द्रव्य अवश्य है। द्रव्य प्रत्यय के भी दो प्रकार हैं- व्यष्टि रूप ता समष्टि रूप। उदाहरणार्थ, मनुष्य व्यष्टि रूप द्रव्य प्रत्यय है तथा सेना समष्टि रूप प्रत्यय है।

३ सम्बन्ध (Relation) -ये भी सरल प्रत्ययों से ही बनते हैं। किन्ही दो व्यक्तियों या वस्तुओं में तलना के आधार पर निर्मित प्रत्यय को सम्बन्ध प्रत्यय कहा जाता है। सम्बन्ध प्रत्यय सर्वदा दो सम्बन्धियों के बीच रहता है। उदाहरणार्थ, पिता-पुत्र, बडा-छोटा, कार्य-कारण इत्यादि। एक ही व्यक्ति विभिन्न स्थानों में विभिन्न सस्बन्धो से सम्बोधित हो सकता है, जैसे एक व्यक्ति पिता-पुत्र, पितामह, जामाता, मित्र-शत्रु आदि विभिन्न सम्बन्धों का हो सकता है।

----------(०)---------